

तिस्रधयभट्टरङ्गमा॥ तिस्रयक
 साकृमभनउतः थान्नेयैउधुनान
 नंसउधुं, मिसुभाडुं, दि, सदनवटेक
 मम, कष्टुथेयडुं, सडुंमडुंरिडः, सु
 मूअऊमकभुऊः, णमिहिमाचं, मम
 भाडुलमभय, मूः, रिडः, धिभूदिनः ॥ १॥ रिडः
 थडुअकः॥ २॥ मयकसादिगुभन
 न, विस्वाकुंभं भिडर डि, भयविहिभु
 नरभेयुपुहिः ० पागभउमुमेड, भन
 नेमरुयेदरिः, विस्वायकूभा, धरियकू
 कूहिः भउमुहिणकूहिः १, उडुदली
 नं विपेव, भूमभू, रिङ्गल्लयमि, सुमु
 ममउडु, पीडिहिदमे ३ थरवडेनभा
 मउणिङ्ग, गल्लिनीउयः रिणउठिङ्ग
 भीहिचमेमप, मेमननेयेमप ५ अच
 भनभूमिसुयं, डिङ्गकिङ्गमिहि,
 दउउममउअवे, मेडुममउअमः १, सु

3.

भल्लवृक्षं भदिधुं, अदधुं भदिधुं
 उंगनूचः भुडिगुद्धुं, मेभरभममसुरि
 दू डीदूयेनू परिभूव ०३ उंयमउदुम,
 भंयमउदुम, सुहुं वममेभा ॥ १॥
 मेभपरिभूडुं दू उंयनू परिभूव ॥
 भंयमपुभूवदुः, भंयविभंभूवः भंय
 विगभिगोमः भुननेरु ॥ १॥ दः उंयुडी
 दूयेनू परिभूव ॥ १॥ यइरु भवभउ सुद
 भुवमंयमग ॥ १॥ भंयभदीयउ, मेभ
 नरनुप्रयविदू, डीदूयेनू परिभूव ०४
 यइरु विगलभंयभिलेकमुदिउम ॥ उं
 भिमनुदिभवभउ, भउलेकमुदिउ
 उंयु, डीदूयेनू परिभूव ०१ ॥ यइरु
 येवभउ, यइयगेभनमिवः, यइभद
 दूडीराध, सुभभउदुपीदू, डीदूये
 नू परिभूव ०१, यइवकभभूरभदिन
 केडिमिवमिवः, लेकयइरु विभउ
 सुभभभउदुपीदू, उंयनू परिभूव ००

यस्कामा निका भस्म यस्कप्रभु विदुषम
 भुषा यस्कप्रभु उरभमभउहुपीहु
 उहुयेहुयेपरिभुव ३०॥ यस्कलेहु भुउहुए
 महुयाउभमालिउः उहुयस्कप्रभु
 उरभमभउहुपीहु उहुयेहुयेपरिभुव ३१
 यस्कमदमेवहुः महुमभमहु ३२
 यस्कप्रभुयस्कप्रभु उरभमभउहुपीहु
 उहुयेहुयेपरिभुव ३३ यस्कप्रभुमभरः
 विभुलेकेमदी यउमेवमुहुउकमहिउ
 उरभमभउहुपीहु उहुयेहुयेपरिभुव ३४
 यस्कप्रभुमभमभुः मभः भुमभमभउहु
 मभुयस्कप्रभुः कभमुस्कप्रभुमभउहुपी
 हु उहुयेहुयेपरिभुव ३५ यः भुमेव
 भुमभुः यपाभुउरभमभउहु उरभमभुः
 भुयस्कप्रभुः भुमेवमुहुयस्कप्रभु उहुयेहुयेपरिभुव ३६
 यः भुमेवमुहुयस्कप्रभुः कभमुस्कप्रभु
 यस्कप्रभुमभमभुः मभः भुमभमभउहु
 मभुयस्कप्रभुः कभमुस्कप्रभुमभउहुपी
 हु उहुयेहुयेपरिभुव ३७ यः भुमेव

भूदगलपडये. पिदगलमेवउहः०
 णिमप्रयेयविभूय मप्रये वयवे भ
 दय विमुहेमेवेहः ॐप्रिहं महु
 उमत्रिमेवउहः॥ वयमेवय॥३॥
 विनयकय॥॥ भितय मभितय मी
 अनभिकय प्रधमउय कुभभुगल
 प्रय॥॥ प्रलेकय ॥॥ प्रले कुम
 य॥॥॥ वभमेवय०० हहीमःभ॥
 मभये०॥॥ प्रपिधय वदयय प्र
 धपीपउये महुमसे प्रधपकुभुमे
 वउहः॥ मययकुगीमे० ॥॥ मयव
 द्वादभुय ००॥ मउय प्रधुय
 प्रोकाय ककेएय महुपलाय
 यउउउय प्रधय महुपधय ॥३॥
 महुप्रिहं००॥ प्रवेदककय००
 मभभुमेप्रपालमेवउहः महुउ
 मत्रिमेवउहः प्रधेनमः १॥ ॥

मुनि मपत्रीकध परथेरध कारि
 क वामिक भानभिक सुत सुत ममभ
 पथविमुद्धि योगकर्म मगीरनेष्टय
 द, पद वरुत उर भुति कलु ममभ
 ति भुभुत एतदामि नभामि दम
 तुमममि गेमाधु कवन एत मठ
 लव भुत ठे भानुति कदिष्टे पन्न
 वरुधु रिधु रुः भुभु मरुय प्रकभ
 मिगुद निद्रुत धरिवम गुरुयधु
 गुरुविदति कुरुये लु पत, मि
 दवल्लेधगीट मिल भुधु यधु
 सुत पभुभुति विरिभुहति ल
 नन युगधल्लनन युगधनगल्ल
 रिधु भु नवधु मि वरुल्ले
 ध, भल्ल भुभु क भुभुदमभु
 विता, मधे, धमन धमभनतु मधु
 मतिनिभितु कल्लमधु गुरुम
 भुलधु धमभिकल्लधु लध
 वरुभुधु मरुधुधु मरुभुधु
 करिष्टे रिजुधु ॥

CC-0. Courtesy Sanjay Raina, Jammu. Digitized by eGangotri

[illegible]

मुद्रनेवम्भन. मुद्रनः द्विविध कथिक वामिक १
 भानभिक लुङ्ग, लुङ्ग भमसुकन्मधक यतुं
 मरुहृठक लुङ्ग नथय उरुत मेधम उरुतुं
 धस्त्रीनकुवत निमित्तं भुभीष्टेयव भनिमि
 उं मधुभीष्टयस्त्रित्तुमित्तं ॥ कलमप्र.

मरुहृठक लुङ्ग नथय उरुत मेधम उरुतुं

देवक.